चतुर्दशी पर 'हाजरी' का वाचन

निर्विचार का अभ्यास करें : युवाचार्य महाश्रमण

लाडनूं, 6 जून।

युवाचार्य महाश्रमण ने जैन विश्व भारती स्थित सुधर्मा सभा में हाजरी वाचन के दौरान कहा कि निर्विचारता का अभ्यास करना चाहिए। जिस समय जिस प्रवृत्ति में लगे हुए हैं। उस समय गहराई से उसमें ही डूब जाये। भावक्रिया के साथ किया गया कार्य सफलता दिलाता है। कार्य पर ध्यान न देकर अन्य विचार में लगने पर कार्य की सिद्धी नहीं होती।

उन्होंने कहा कि प्रतिक्रमण करते समय मन प्रतिक्रमण में ही रहना चाहिए। प्रतिक्रमण सहज स्वाध्याय है। ध्यान पूर्वक एवं प्राणवत्तापूर्वक स्वाध्याय करने पर निर्मलता प्राप्त होती है। उन्होंने आज्ञा को धर्म एवं अनाज्ञा को अधर्म बताते हुए कहा कि संघ की सुव्यवस्था के लिए आचार्य भिक्षु ने सर्व साधु–साध्वियों को एक आचार्य की आज्ञा में रहने का निर्देश दिया।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ की अखण्डता का राज है एक नेतृत्व। यहां पर किसी भी मुनि के द्वारा व्यक्तिगत शिष्य–शिष्याएं नहीं बनाए जाते। आचार्य अयोग्य शिष्य को गण से अलग कर सकते हैं। उन्होंने सर्व साधु–साध्वियों को गुटबाजी बचने की प्रेरणा दी।

जैन विद्या दीक्षान्त समारोह 14 को

जैन विश्व भारती के शिक्षा विभाग समण संस्कृति संकाय के द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित होने वाली जैन विद्या परीक्षाओं का दीक्षांत समारोह 14 जून को आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आयोजित होगा। दोपहर 2 बजे आयोजित होने वाले इस समारोह में विज्ञ उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को विज्ञ उपाधि प्रदान की जायेगी।

विभागाधिपति रतनलालजी चौपड़ा के अनुसार 13 जून को प्रातः 9 बजे अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम तीन स्थानों पर रहने वाले विद्यार्थियों, सर्वश्रेष्ठ केन्द्र को, आंचलिक संयोजकों को एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया जायेगा। 13, 14 जून को ही केन्द्र व्यवस्थापकों, आंचलिक संयोजकों एवं विज्ञ उपाधि प्राप्तकर्त्ता विद्यार्थियों की कार्यशाला भी आयोजित होगी। जिनमें मुनिजनों एवं विषय विशेषज्ञों के द्वारा प्रशिक्षण दिया जायेगा।

– अशोक सियोल
99829 03770